5HU8J4

पाठ–21

सुनता के डोर

पाठ परिचय– सियान मन कहिथें के मिल–जुर के, सुनता ले रेहे म मुसकुल काम बन जाथे, अउ बड़े–बड़े बिपत ह घलो टर जाथे। उही बात ल ये कहानी म बताय गेहे। परेवा, मुसवा, कऊँवा, केछवा, अउ मिरगा मन अक्कल लगा के सुनता ले अपन परान ल बचाइन। ए पाठ म कहना इही हे के लइका मन म मिलजुर के रहे के अउ सुनता के भाव जागय।

एक जंगल म परेवा अउ मुसवा रहँय। दुनो झन सँगवारी रहिन। परेवा अउ मुसवा के मितान बनना ह समझ म नइ आवत हे फेर मन मिल जाथे तब अइसन बात के बारे म कोनो नइ सोचय। मुसवा अउ परेवा एक–दूसर ल अतका जादा परेम करँय, जइसन सग भाइ मन करथें। उँकर मया ल देख के कउँवा मन म सोंचथे–''ये दुनो झन मोर सँगवारी बन जाँय त बढ़िया हो जातिस, काबर के सँगवारी मन बेरा–बेरा म काम आथें'', अउ दुनो झन ल मितान बनाय बर ठान लिस। ओ मुसवा के तीर म जाके कहिस ''मुसवा भइया ! तोर अउ परेवा के मितानी ल देखेंव त मोरो अंतस म मया जाग गे। तोर ले बिनती करत हँव, तैं ह मोला अपन मितान बना लेते त बढ़िया हो जातिस।''

मुसवा– '' फेर तैं ह कउँवा अउ मँय मुसवा, भला कइसे निभ सकत हन ? काबर के मुसवा अउ कउँवा म तो जनमजात दुस्मनी हे, फेर तोर उपर बिसवास कइसे करँव ? नहीं भाई, दुरिहा रह उही ह बने हे।''

कउँवा– ''मोर उपर भरोसा कर, मैं तोर अहित नइ होवन देवँव। तैं ह मोला अपन मितान बना लेबे त अपन आप ल मय भागमानी समझहूँ अउ कहूँ मोला अपन मितान नइ बनाय त बिन खाय पिये मर जाहूँ।''

शिक्षण संकेत– पाठ ल पढ़ाय के पहिली गुरुजी ह चिरइ–चिरगुन, जीव–जंतु मन के नाँव, उँकर सुभाव के बारे म लइका मन ले गोठ–बात करँय फेर शुद्ध उच्चारण करके पढँय, तेकर पाछू लइका मन ल पढ़वावँय। सुनता के अउ कोनो किस्सा बतावँय।

सिरतोन बात आय, कउनो कउँवा के बोली लबारी होतिस त कउँवा के अंतस नइ डोलतिस। कउँवा सच्चा रहिस। मुसवा ल कउँवा के उपर बिसवास होगे अउ कउँवा ह ओकरे संग पेड़ म रहे लागिस। अब तो तीन मितान जुरिया गें–परेवा, मुसवा अउ कउँवा। ये तीनो सँगवारी मजा म रहे लगिन।

थोरिक दिन बाद उहाँ दुकाल परिस। अन्न के एक दाना मिलना घलो मुसकुल होगे। अइसन हालत म देख के कउँवा ह मुसवा अउ परेवा ल किहिस– ''सँगवारी हो अब इहाँ जादा दिन ले रहना मुस्कुल हे। मोर बिचार म ये जघा ल छोड़ के आन डहर चल देना चाही। इहाँ ले दुरिहा म दुसर हरियर–हरियर जंगल अउ तरिया हे, उहाँ जाके रहिबो। ओ तरिया म मोर एक झन मितान रहिथे। जउन ह बेरा–बेरा मँदद करही अउ थोरको दुख नइ होन दय।''

पहिली तो दुनो झन नइ मानिन, फेर कउँवा ह जिद करिस, तब परेवा अउ मुसवा मन जाय बर राजी होगें। मुसवा ल कउँवा ह अपन चोंच म उठा लिस अउ परेवा हवा म उड़ावत ओकर संग चल दिस। तीनों तरिया तीर पहुँचगें तब कउँवा के मितान केछुवा सन उँकर भेंट होइस। केछुवा अपन मितान मन के मान–गउन करे बर कोनो परकार के कमी नइ करिस।

एक दिन ये चारों मितान गोठियात रिहिन तभे एक ठन मिरगा दउँड़त–दउँड़त तीर म आ गे। ओ ह हँफरत–हँफरत कहिस–''कुछू जानत हव, बड़ जबर दुख अवइया हे, बाँचे बर हे त तुरते भाग चलव।''

केछुवा ह कहिस– ''अरे भइ कुछ बता तो भला का होवइया हे ? जनउला तो नइ जनावत हस।'' मिरगा कहिस– ''इहाँ ले थोरिक दुरिहा म नँदिया के करार म एक झन राजा के सेना हे अउ काली ओ सेना ह इही डहर ले जाही सुने हँव । अब तुमन जानव भई। अइसन हालत म हमर इहाँ रहना परान देवउल आय।''

अतका बात ल सुन के सबो मितान संसो म परगे। ए तो जानत हन सेना जेती ले जाही, रउर मचा देही। काबर के राजा के सेना अतलँगहा होथे। सबोझन गुनत–गुनत थक गें फेर कोनो उदीम नइ सूझिस। आखरी म कउँवा ह किहिस– ''सँगवारी हो, मोर मन म एक ठन बात आए हे। ये जंगल ल छोड़ के जाए म हमर भलइ हे, जियत रहिबो त इहाँ अउ आ जबो।

अउ सबो सँगवारी मन चल दिन। केछुवा अउ मुसवा तो भुइयाँ म रेंगत–रेंगत जावत रहँय, परेवा अउ कउँवा उड़त–उड़त उँकर सँग देवत रहँय। केछुवा पानी म रहइया जीव आय एखर सेती भुइयाँ म रेंगना अड़बड़ मुसकुल होगे। फेर इहाँ तो जीव ला बचाय के सवाल रहय। एक झन शिकारी के आँखी म केछुवा हा दिख गे। शिकारी ह तुरते–तुरत केछुवा ल फाँदा म फँसा डारिस। केछुवा ल शिकारी के फाँदा म फँसत देख के चारों सँगवारी मन रोय लगिन अउ

सन्सो करे लगिन। गजब गुने के बाद कउँवा किहिस– ''सँगवारी हो! एक ठन उदिम मोर अंतस म आए हे, जेकर ले कछुवा फाँदा ले उबर जाही।'' सबो झन केहे लगिन– ''का बात आय ? तुरते बता।''

कउँवा– ''बात ए हे, मिरगा ह नँदी के तीर म मुरदा बरोबर सुत जाय, अउ मैं ओकर देह म देखाए बर चोंच मारहूँ। शिकारी ह मिरगा ल उठाय बर केछुवा ल भुइयाँ म रख दिही। जतका बेरा म ओहर मिरगा तक पहुँचही ओतका बेरा म मुसवा ह केछुवा के फाँदा ल काट के निकाल दिही। केछुवा झट ले पानी म उतर जाही अउ मुसवा बिल म घुसर जाही। ओती मिरगा के तीर म शिकारी आए ल धरही त मँय उड़ा जाहूँ, अतके म मिरगा उठ के भाग जाही। फेर शिकारी के एक्को उदिम काम नइ करय।'' अइसन करे बर सबो झन एके सुनता होगे।

मिरगा ह बताय काम ल करिस। शिकारी मिरगा ल मर गे हे जानके जाल म फँसे केछुवा ल भुइयाँ म फेंक दिस अउ मिरगा ल लाए बर नँदी के तीर म चल दिस। पहिली बनाय उदिम के मुताबिक मुसवा ह फाँदा ला काट दिस अउ केछुवा ह पानी म कूद गे। शिकारी के हाथ ले शिकार निकलगे। शिकारी देखत रहिगे। ओ हर फाँदा ल सकेलिस अउ घर चल दिस। अइसने जुरमिल के सुनता म अउ सँघरा रहे म अड़बड़ मुसकुल काम घलो बन जाथे।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने–

सँगवारी	–	साथी	परेवा	–	कबूतर	मुसवा	–	चूहा
परेम	–	प्रेम	सुग्घर	–	अच्छा	मुरूख	–	मूर्ख
अंतस	–	हृदय	दुकाल	–	अकाल	मितान	–	दोस्त
दुरिहा	–	दूर	थोरिको	–	थोड़ा सा	घाटा	–	हानि
लबारी	–	झूठ	जनमजात	–	जन्म से ही	दूभर	–	कठिन
मुसकुल	–	कठिन	उत्ता धुर्रा	–	जल्दी–जल्दी	थोरिक	–	थोड़े
तरिया	–	तालाब	ठानना	–	निश्चय करना	पीरा	–	दर्द
तुरते	–	तुरंत	परान देवउल	–	खतरे में डालना	अतलँगहा	–	उत्पाती/खतरनाक
उदिम	–	उपाय	आन डहर	–	दूसरी तरफ	झटले	–	जल्दी
भलइ	–	भलाई	रहवईया	–	रहने वाला	जुर मिल	–	एक साथ
संसो	–	चिंता	रउर	–	तबाही			

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि

गुरुजी ह कक्षा के लइका मन ल दू दल म बाँट के एक दूसर ल मुँहअखरा प्रश्न पूछे ल कहँय–

जइसे– **क.** कउँवा परेवा ल कइसे बिसवास देवइस ?

ख. चारों मितान गोठियावत रहिथें त मिरगा ह आके का कहिथे ?

ग. मुसवा ह फाँदा ल नइ काटतिस त का होतिस ?

घ. सिकारी के मन म का बात आइस ?

बोध प्रश्न

प्रश्न 1.खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. परेवा अउ मुसवा ल देख के कउँवा के मन म का बिचार आइस ?

ख. मुसवा के तीर म जाके कऊँवा हा ओला का कहिस ?

ग. मुसवा ह कउँवा ल मितान काबर नइ बनावँव कहिस ?

घ. मुसवा ह कउँवा ल मितान कइसे बना लिस ?

ङ. दुकाल परिस त कउँवा ह अपन सँगवारी मन ल कहाँ लेगिस, अउ उहाँ कोन मिलिस ?

च. नँदिया के करार म कोन मन ठाढ़े रिहिस, अउ ओला सबो सँगवारी मन काबर डर्रावत रहिन ?

छ. केछुवा ल शिकारी के फाँदा ले उबारे बर कउँवा ह का उदिम करिस ?

प्रश्न 2. कहानी ल पढ़के बतावव– ए गोठ ल कोन ह कोन ल किहिस ?

1. मँय ह तोर विनती करत हँव तँय ह मोला अपन मितान बना लेते त बढ़िया हो जातिस।
2. बड़े जबर दुख अवइया हे, बाँचे बर हे त तुरते भाग चलव।
3. ये जंगल ल छोड़ के जाय म हमर भलइ हे, जियत रहिबो त इहाँ अउ आ जाबो।

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखे वाक्य ल पढ़व अउ बिचार के लिखव– का होतिस ?

1. कउँवा ह सँग म नइ रहितिस।
2. शिकारी ह फाँदा ल फेंक के मिरगा मेर नइ जातिस।

प्रश्न 4. सुनता के डोर पाठ म तुमन ल काकर काम अउ गोठ ह बने लागिस अउ काबर ? अपन बिचार पाँच वाक्य म लिखव।

1. तुमन कोन–कोन छत्तीसगढ़ी कहावत ल जानथव, सोचव अउ लिखव।

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण

गतिविधि

गुरुजी पाठ के चार–पाँच वाक्य ल बने साफ–साफ पढ़ँय। लइका मन ओला अपन कापी म लिखहीं। ओकर बाद गुरुजी ह सही शब्द ल श्यामपट म लिख दँय जेखर ले लइका मन ल सही शब्द के जानकारी हो जाय।

प्रश्न 1. खाल्हे लिखाय वाक्य म सहीं–सहीं विराम चिह्न लगावव–

पहिली तो दुनो झन नइ मानिन फेर कउँवा ह जिद करिस त परेवा अउ मुसवा मन जाय बर राजी होगे। मुसुवा ल कऊँवा ह अपन चोंच म उठा लिस अउ परेवा हवा म उड़ावत ओकर संग चल दिस।

प्रश्न 2. संज्ञा के सँग 'मन' प्रत्यय लगा के वचन बदलव–

जइसे– मैं तोर कभू अनहित नइ होन देवव।

उत्तर–मैं तुँहरमन के कभू अनहित नइ होन देवँव।

1. मिरगा दँउड़त आइस।
2. केछुवा ल फाँदा म फँसा डारिस।
3. मुसवा के तिर म चल दिस।
4. मछरी तउँरत हे।

प्रश्न 3. पढ़व अउ समझव–

क. मोला अपन मितान बना लेबे।

ख. बिन खाय –पिये मर जाहूँ।

ग. मुसवा ह जाय बर राजी होगे।

घ. चारो सँगवारी मन रोए लागिन।

उपर म लिखाय वाक्य मन ल चेत लगा के पढ़व अउ रेखा खिंचाय शब्द मन ल गुनव "जेन शब्द मन ले कउनो बुता/काम होय के अउ करे के पता लगथे, ओला क्रिया केहे जाथे।" पाठ म आय पाँच क्रिया शब्द छाँट के लिखव।

प्रश्न 4. खाली जघा म लकीर खिंचाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाले शब्द भरव।

क. परेवा अउ मुसवा मितान आय फेर कउँवा .....आय।

ख. मिरगा अउ कउवा तीर म चल दिस त केछवा ह .....म रिहिस।

ग. तोर मेर कमती पइसा हे मोर मेर .....पइसा हे।

घ. घोड़ा अतलँगहा होथे, बइला ह .....होथे।

ड. सुनता म बड़े–बड़े काम बन जाथे अउ .....म बिगड़ जथे।

योग्यता विस्तार

ये कहानी पाठ ल नाटक म बदल के अपन गुरुजी के मदद ले कक्षा म खेलव।

रचना

1. अपन गाँव/घर के सियनहा मनखे मन ल पूछ के अइसने सुनता के कहानी छत्तीसगढ़ी म लिखव।
2. चिरइ–चिरगुन अउ जीव–जन्तु के कहानी पंचतंत्र के किताब म खोजव अउ पढ़व।